

धन-रत्न की ज्योति जगे

हिंदी
विवेक

WE WORK FOR A BETTER WORLD

Issue : 01 - 07 November 2026



पितांबरी देवभक्ती
अगरबत्ती
With Natural Ingredients

मनाएँ दीपावली का त्योहार, प्राकृतिक सुगंध के साथ!

दीपावली की मंगलमय शुभकामनाएँ !

चंदन
गुलाब
मौगारा

Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564/5699
Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

पंचदिवसीय प्रकाशपर्व का महत्वपूर्ण उत्सव	डॉ.जितेंद्र पांडेय	04
हाथों को काम मिले	डॉ. दीपक कोहली	06
परम्परा, आस्था व विश्वास के पन्ने	महेश तिवारी	08
सुधार की दिशा में भारत की पहल	ललित गर्ग	10
बंगाल की खाड़ी में उठे अर्नब का कहर	पंकज चतुर्वेदी	12
नसीरुद्दीन शाह के बिगड़े बोल	रामेन्द्र सिन्हा	15
त्योहारों से आर्थिकी को बढ़ावा	सतीश सिंह	17
मिठास की विरासत	स्निग्धा अवतंस	19
घुटती जिंदगी व समाधान की खोज	डॉ. विनीत उत्पल	21
आवारा कुत्तों का बढ़ता आतंक	डॉ. ईलेवान ठाकर	23
भारत ने फिर रचा इतिहास	प्रवीण सिन्हा	25
ग्रीन पटाखे फोड़ें, प्रदूषण फैलाना छोड़ें	सुभाष चंद्र लखेड़ा	27
अजब-गजब	संकलन	28
इधर भी देखें	संकलन	29

पंजीयन शुल्क



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933



पंचदिवसीय प्रकाशपर्व का उत्सव

धनतेरस के दिन से ही पंचदिवसीय प्रकाशपर्व का आरम्भ हो जाता है। धनतेरस के अवसर पर सोने-चांदी से लेकर कई सामानों के खरीदने का प्रचलन है। ऐसा माना जाता है कि इनकी खरीदारी से घर में धन, धान्य व सुख-समृद्धि आती है।

भारतवर्ष संस्कृति प्रधान देश है। यहां कदम-कदम पर विविधता देखने को मिलती है। इसी क्रम में पंचदिवसीय दीपोत्सव भी शामिल है। प्रत्येक दिन का अपना आध्यात्मिक, पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक महत्व है। हमारे पूर्वजों ने त्योहारों के इस पैकेज को दीपावली का नाम दिया। दीपावली में विज्ञान और धर्म एक साथ खड़े दिखाई देते हैं। धर्म को विज्ञान से बांधा गया है ताकि मनुष्य भटकते हुए भी विज्ञान में आबद्ध रहे एवं धर्म के केंद्र में बना रहे। दीपावली के पंचदिवसीय त्योहारों में धनतेरस का विशेष महत्व है। धनतेरस दो



डॉ. जितेंद्र पांडेय

शब्दों के योग से बना है 'धन' और 'तेरस' धन का अर्थ केवल 'समृद्धि' ही नहीं बल्कि हमारे पुराणों में 'स्वास्थ्य' को भी धन माना गया है। तेरस का सम्बंध 'त्रयोदशी तिथि' से है। धनतेरस मनाए जाने के पीछे विशाल पौराणिक पृष्ठभूमि है। समुद्र मंथन के दौरान इसी दिन आयुर्वेद के देवता धन्वंतरी का प्राकट्य हुआ था। श्रीमद्भागवत महापुराण में लिखा गया है: धन्वंतरिर्भगवान् स्वयं अमृतपूर्णकलशं बिभ्रत् समपद्यत। अर्थात् भगवान धन्वंतरि स्वयं अमृत से भरा कलश धारण कर क्षीरसागर से प्रकट हुए।

भगवान धन्वंतरि का स्वरूप अत्यंत

तेजस्वी और मनोहर है। उनका वर्ण वर्षा ऋतु के मेघों के समान श्यामल है तथा वे पीताम्बर धारण करते हैं। उनकी चार भुजाएं हैं, जिनमें एक हाथ में अमृत-कलश, एक हाथ में शंख, एक हाथ में सुदर्शन चक्र तथा एक हाथ में औषधि या जलौका होती है, जो आयुर्वेद और चिकित्सा का प्रतीक मानी जाती है। भारतीय संस्कृति में भगवान धन्वंतरि को आयुर्वेद का प्रवर्तक माना जाता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हुआ था। अतः इस दिवस को धनतेरस के साथ-साथ 'धन्वंतरि जयंती' के रूप में भी मनाया जाता है। उनका संदेश केवल रोगों का उपचार करना नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को बनाए रखना है ताकि मानव जीवन स्वस्थ, सुखी और सम्पन्न रहे।

धनतेरस के दिन घर के दक्षिण दिशा में यम के लिए दीया जलाने की प्रथा है। मान्यता है कि ऐसा करने से परिवार में किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती है तथा मनुष्य के मन से मृत्यु का भय निकल जाता है। स्कंदपुराण में धनतेरस के दिन यमदीप को लेकर इस प्रकार लिखा गया है, 'कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे, यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनिश्चयति' अर्थात् कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के दिन सायंकाल में घर के बाहर यमदेव के उद्देश्य से दीपक रखने से अपमृत्यु का निवारण होता है। पद्मपुराण के अनुसार, 'कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां तु पावके। यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनिश्चयति' अर्थात् कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को घर से बाहर यमराज के लिए दीपक रखना चाहिए, इससे मृत्यु का नाश होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार राजा हिमा के पुत्र के विवाह के चौथे दिन सर्प दंश द्वारा उसकी मृत्यु का योग था। उस दिन उसकी पत्नी ने दरवाजे पर बहुत सारे दीपक जलाकर रख दिया। यमराज सांप के रूप में आए। दीयों के प्रकाश में उनकी आंखें चौंधिया गईं। दूसरी ओर मृतक की पत्नी ने यमराज को कहानियां सुनाकर रोके रखा। इससे मृत्यु का क्षण बीत गया जिससे यमराज बिना प्राण लिए लौट गए। तब से यम के लिए दीप जलाने की परम्परा चली आ रही है।

क्या-क्या और क्यों खरीदा जाता है?

सोना और चांदी: इसे स्थिरता, शुद्धता और धन की देवी मां लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। इस दिन सोने या चांदी के गहने या सिक्के खरीदे जाते हैं। इससे घर में धन-सम्पत्ति बढ़ती है और सुख-शांति आती है।

नए बर्तन: पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान धन्वंतरि

समुद्र मंथन के दौरान हाथों में अमृत का कलश लेकर प्रकट हुए थे। इसलिए पीतल, ताम्बे या अन्य धातुओं के बर्तन खरीदना आरोग्य और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

झाड़ू: झाड़ू को मां लक्ष्मी का रूप माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि झाड़ू द्वारा घर की साफ-सफाई करने से नकारात्मक ऊर्जा और दरिद्रता चली जाती है और मां लक्ष्मी का आगमन होता है।

खड़ी(साबुत)धनिया: साबुत धनिया के बीजों को सुख-समृद्धि और धन-धान्य का प्रतीक माना जाता है। धनतेरस पर धनिया खरीदकर मां लक्ष्मी को चढ़ाने से दरिद्रता दूर होती है। धन लाभ के योग बनते हैं।

नमक-इस दिन कई लोग बाजार से नमक खरीदकर लाते हैं। पानी में नमक मिलाकर घर के फर्श पर पोंछा लगाने से घर की नकारात्मकता दूर होती है एवं घर में ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है।

कौड़ी-कौड़ी को माता लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। इसमें धन को आकर्षित करने की क्षमता होता है। अतः लोग इसे धनतेरस के दिन बाजार से खरीदकर लाते हैं। समुद्र मंथन के दौरान माता लक्ष्मी के साथ कौड़ी भी प्रकट हुई थी।

गोमती चक्र- गोमती चक्र भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी का प्रतीक है। इसके एक तरफ चक्र तो दूसरी ओर का भाग उठा होता है, जिसे लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। धनतेरस के दिन इसे घर में लाने से वास्तु दोष का निवारण, आर्थिक समृद्धि, बुरी नज़र एवं तंत्रबाधा से रक्षा और स्वास्थ्य लाभ भी मिलता है।

कंवलगट्टा के दाने या माला-कमल माता लक्ष्मी को सर्वाधिक प्रिय है। इसे धनतेरस के दिन खरीदकर महालक्ष्मी की पूजा में शामिल करना चाहिए। लक्ष्मी जी के मंत्र जाप के लिए कंवलगट्टे की माला का उपयोग करना चाहिए। इस माला के प्रयोग से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। लक्ष्मी पूजन के बाद इसे तिजोरी में रखना चाहिए। ऐसा करने से दरिद्रता दूर होती है और सौभाग्य का उदय होता है।

अन्य भौतिक वस्तुएं - लोग धनतेरस के दिन वाहन, वस्त्र, जमीन, घर, शेयर आदि भी खरीदते हैं। ऐसा माना जाता है कि भौतिक वस्तुओं को खरीदने के लिए यह दिन शुभ है। इससे दिन दूना और रात चौगुना प्रगति होती है।

इस प्रकार धनतेरस भारतीय परम्परा की समृद्धि का द्योतक है।



संकल्प

प्रधानमंत्री मोदी का 'मन की बात' में दिया गया यह संदेश केवल एक साधारण अपील नहीं है, बल्कि यह भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाने का एक प्रभावी मंत्र है।



डॉ. दीपक कोहली

हाथों को काम मिले

दीपावली भारत का एक प्रमुख और अत्यंत पवित्र त्योहार है। यह केवल दीपों का पर्व नहीं है, बल्कि खुशियों, आत्मीयता, समृद्धि और परस्पर सहयोग का एक अनूठा संगम है। दीपावली की आहट होते ही देश के हर कोने में एक नई उमंग और उत्साह का संचार होने लगता है। घरों की साफ-सफाई से लेकर सजावट और खरीदारी की तैयारियां जोरों-शोरों से शुरू हो जाती हैं। इसी पावन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने प्रसिद्ध कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए एक बेहद महत्वपूर्ण और दूरगामी संदेश दिया। उन्होंने देशवासियों से अपील की कि इस दीपावली पर वे अपनी खरीदारी में स्थानीय और छोटे कारोबारियों को प्राथमिकता दें तथा मिट्टी के दीये, हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पाद और रेहड़ी-पट्टरी वालों से सामान खरीदें।

प्रधानमंत्री द्वारा कही गई इस बात का तात्पर्य अत्यंत गहरा, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से बेहद संवेदनशील है। जब वे स्थानीय दुकानदारों और छोटे कारीगरों से सामान खरीदने का आग्रह करते हैं, तो इसका सीधा उद्देश्य समाज के उस वर्ग को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना होता है जो अपनी दिन-रात की कड़ी मेहनत और कला के बल पर हमारे त्योहारों को जीवंत बनाते हैं। 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना इसी विचार के केंद्र में है। इस संदेश के पीछे की मंशा यह है कि त्योहारों की खुशी सिर्फ कुछ बड़े मॉल या ऑनलाइन ई-कॉमर्स कंपनियों तक ही सीमित न रहे, बल्कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के घर तक पहुंचे। जब एक आम नागरिक किसी स्थानीय कुम्हार

से मिट्टी का दीया, किसी बुनकर से सजावटी कपड़ा या किसी स्थानीय व्यापारी से मिठाई अथवा अन्य सामान खरीदता है, तो वह केवल एक वस्तु नहीं खरीदता, बल्कि उस गरीब परिवार की मेहनत का सम्मान करता है और उसके घर में भी दीपावली का चिराग जलाने में सहायता करता है। प्रधानमंत्री की इस अपील का तात्पर्य देश के प्रत्येक नागरिक में अपने स्थानीय उत्पादों के प्रति गर्व की भावना जगाना और एक ऐसा समावेशी समाज बनाना है जहाँ समृद्धि का बंटवारा बराबरी से हो सके।

इस सोच और पहल का देश की अर्थव्यवस्था तथा छोटे कारोबारियों पर अत्यंत व्यापक और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाले देश में असंगठित क्षेत्र और छोटे कारोबारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। देश की एक बहुत बड़ी जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए इन्हीं छोटे व्यापारों, कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प पर निर्भर है। जब त्योहारों के मौसम में करोड़ों देशवासी स्थानीय बाजारों का रुख करते हैं और अपने आस-पास के दुकानदारों से खरीदारी करते हैं, तो बाज़ार में नकदी का प्रवाह (कैश फ्लो) तेजी से बढ़ता है। यह पूंजी सीधे तौर पर स्थानीय स्तर पर ही घूमती है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक ज़बरदस्त गति मिलती है।

छोटे कारोबारियों के लिए यह समय किसी वरदान से कम नहीं होता। पूरे वर्ष वे इस त्योहारी सीजन की प्रतीक्षा

करते हैं ताकि अपनी साल भर की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। जब लोग मॉल या विदेशी सामानों के बजाय स्थानीय दुकानदारों से खरीदारी करते हैं, तो इन छोटे व्यापारियों की बिक्री में भारी बढ़ोत्तरी होती है। बिक्री बढ़ने से न केवल उनकी आय में सुधार होता है, बल्कि उनके भीतर अपने काम के प्रति एक नया आत्मविश्वास भी पैदा होता है। इससे उन पारम्परिक कारीगरों और कलाकारों को भी नई संजीवनी मिलती है, जो आधुनिकता और मशीनी युग की दौड़ में धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर पहुंच रहे थे। जब देशवासियों का समर्थन उन्हें मिलता है, तो वे अपनी कला और हुनर को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए प्रेरित होते हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार, हाथ से सजावटी सामान बनाने वाले दस्तकार, मोमबत्ती और दीए बनाने वाले छोटे गृह उद्योग और स्थानीय दर्जी या दुकानदार, इन सभी के जीवन में यह निर्णय एक बड़ा सकारात्मक बदलाव लाता है।

इसके साथ ही, छोटे कारोबारियों के सशक्तिकरण से रोजगार के नए अवसरों का सृजन भी होता है। जब स्थानीय स्तर पर मांग बढ़ती है, तो उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक लोगों की आवश्यकता होती है। इससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में मौसमी तथा स्थायी दोनों तरह के रोजगार उत्पन्न होते हैं, जो बेरोजगारी को कम करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसके अलावा, जब हम अपने देश में बने और स्थानीय स्तर पर तैयार किए गए सामानों को खरीदते हैं, तो इससे विदेशी वस्तुओं पर हमारी निर्भरता कम होती है और देश का धन देश के भीतर ही बना रहता है। यह प्रक्रिया राष्ट्रीय आय को मजबूत करती है और देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में एक मुख्य भूमिका निभाती है।

आर्थिक पहलुओं से परे, इस पहल का एक बेहद सुंदर सामाजिक

और मानवीय पक्ष भी है। त्योहार वास्तव में खुशियां बांटने का नाम है। जब एक ग्राहक किसी छोटे रेहड़ी-पट्टरी वाले या कुम्हार के चेहरे पर मुस्कान देखता है, तो उसकी अपनी दीपावली की खुशी दोगुनी हो जाती है। यह भावना समाज में आपसी सद्भाव, हमदर्दी और सहकारिता को बढ़ावा देती है। यह हमें सिखाती है कि हमारी खुशियां तब तक अधूरी हैं जब तक कि हमारे आस-पास का वातावरण और समाज का हर वर्ग प्रसन्न न हो। जब देश का हर नागरिक अपनी खरीदारी का एक हिस्सा स्थानीय व्यापार के नाम करता है, तो वह अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे रहा होता है।

...

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

पुस्तकों का खजाना

हिंदी विवेक
"We Work For A Better World"

10 से अधिक प्रतिचां बुक करने पर विशेष छूट दी जाएगी

मंदिर	३	विवेक	३	विवेक	३
₹ 700/-		₹ 700/-		₹ 700/-	
महायोद्धा	३	विवेक	३	विवेक	३
₹ 700/-		₹ 700/-		₹ 400/-	
३	३	३	३	३	३
₹ 500/-	₹ 250/-	₹ 180/-	₹ 250/-	₹ 250/-	₹ 150/-
₹ 200/-					

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

• Bank Details : State Bank of India • Branch : Charkop,
• A/C No. : 00000043884034193 • IFSC Code : SBIN0011694

पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067

प्रशांत : 9594961855 / भोला : 9930016472 / संदीप : 7045961331
कार्यालय : 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

UPI कोड को स्कैन करके QR कोड कोड करें और कोड कोड कोड में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

दीपावली पर खुलने वाला नया बहीखाता इसी सोच को अपने भीतर समेटे रहता है। वह बीते वर्ष का हिसाब बंद करने के साथ आने वाले समय के लिए नई आशाओं का पन्ना भी खोलता है।



महेश तिवारी

परम्परा, आस्था व विश्वास के पन्ने



दीपावली आते ही बाजारों में रौनक बढ़ने लगती है। दुकानों की सजावट, लक्ष्मीपूजन और नए कारोबार की तैयारियों के बीच एक पुरानी परम्परा आज भी अपनी जगह बनाए हुए है। नया बहीखाता खरीदना और उसकी पूजा करना। डिजिटल लेन-देन के दौर में लाल कपड़े में बंधी ये किताबें भले ही रोजमर्रा के हिसाब-किताब से दूर होती जा रही हों, किंतु भारतीय व्यापारिक संस्कृति में उनका महत्व अब भी बना हुआ है। वे केवल आय-व्यय का विवरण रखने वाली पुस्तिकाएं नहीं, बल्कि आस्था, अनुशासन और कारोबारी भरोसे की विरासत हैं। एक समय था, जब बहीखाता व्यापारी की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में गिना जाता था। किससे माल खरीदा, किसे उधार

दिया, कितना भुगतान मिला और कितनी रकम बाकी है। इन सभी जानकारीयों का व्यवस्थित रिकॉर्ड इन्हीं पन्नों में रखा जाता था। व्यापारी की लिखावट, गणना और हिसाब रखने का तरीका उसकी कार्यशैली का परिचय देता था। इसलिए प्रत्येक प्रविष्टि में स्पष्टता और सटीकता आवश्यक थी। अनावश्यक काट-छांट या अस्पष्ट लेखन से बचा जाता, क्योंकि एक छोटी-सी गलती भी आगे चलकर हिसाब में भ्रम पैदा कर सकती थी। इन पुस्तकों में दर्ज संख्याएं केवल आर्थिक लेन-देन नहीं दर्शाती थीं, वे व्यापारिक सम्बंधों और आपसी विश्वास का आधार भी थीं।

बहीखाते की शुरुआत भी साधारण ढंग से नहीं होती थी। भारतीय परम्परा में नए कार्य का आरम्भ शुभ संकेत के साथ

करने की मान्यता रही है। इसी भावना से पहले पन्ने पर 'श्री गणेशाय नमः', 'ॐ' या 'शुभ-लाभ' लिखा जाता था। भगवान गणेश का स्मरण विघ्नों से मुक्ति की कामना से जुड़ा है, जबकि देवी लक्ष्मी की पूजा धन-धान्य और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है। इस तरह लेखा-जोखा शुरू करने से पहले व्यापारी अपने काम के लिए मंगलकामना करते थे। नए बहीखाते का पहला पन्ना इस परम्परा का सबसे विशिष्ट हिस्सा होता है। उस पर रोली या सिंदूर से स्वास्तिक बनाया जाता, हल्दी से शुभ चिह्न अंकित किए जाते और कुछ परम्पराओं में नवग्रहों के प्रतीक के रूप में नौ बिंदु भी बनाए जाते थे। पूजा के समय फूल, अक्षत, पान के पत्ते और सिक्के अर्पित किए जाते। कहीं देवी-देवताओं के नाम लिखे जाते, तो कहीं 'श्री' शब्द को कलात्मक शैली में सजाया जाता था। इन विधियों का स्वरूप क्षेत्र और समुदाय के अनुसार बदल सकता है, लेकिन इनका मूल भाव एक ही है नए कारोबारी वर्ष की शुरुआत आशा, श्रद्धा और सद्भाव के साथ करना।

गुजरात और राजस्थान सहित पश्चिमी भारत के कई हिस्सों में दीपावली पर नए बहीखाते की पूजा की परम्परा आज भी दिखाई देती है। महाराष्ट्र सहित देश के अन्य भागों में भी अनेक व्यापारिक परिवारों में भी लक्ष्मीपूजन और नए लेखे की शुरुआत से जुड़ी रीति-रिवाज प्रचलित हैं। यह अवसर पुराने हिसाब की समीक्षा करने, बकाया भुगतानों को व्यवस्थित करने और आगामी वर्ष की योजनाएं बनाने का समय भी होता है। इस प्रकार धार्मिक परम्परा और व्यावसायिक व्यवहार एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं। 1 फरवरी 2020 को बजट पेश करने के लिए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट से जुड़े कागजात लाल रंग के कपड़े में रखकर संसद पहुंची थी और उस कपड़े पर अशोक की लाट बनी हुई थी। उस दौरान इसे पश्चिमी विचारों की गुलामी से निकलने का प्रतीक बताया गया था। विदित हो कि भारतीय संस्कृति में लाल रंग शगुन यानी शुभ का प्रतीक होता है।

आधुनिक तकनीक ने बहीखाते की भूमिका अवश्य बदल दी है। आज लेखांकन सॉफ्टवेयर, डिजिटल लेजर और ऑनलाइन भुगतान प्रणालियां लेन-देन का रिकॉर्ड तेजी से तैयार कर सकती हैं। पुराने विवरण खोजना और आर्थिक स्थिति का

आकलन करना भी पहले की तुलना में आसान हो गया है। फिर भी कई व्यापारी दीपावली पर नया बहीखाता खरीदते हैं, उसकी पूजा करते हैं और उसमें पहली प्रविष्टि दर्ज करते हैं। अब यह पुस्तक हमेशा दैनिक हिसाब रखने का साधन नहीं होती, कई बार यह परम्परा से जुड़े रहने और नए वर्ष का स्वागत करने का प्रतीक बन जाती है। बहीखाते को एक नया जीवन कला और निजी लेखन के क्षेत्र में भी मिला है। इसकी कपड़े की जिल्द, हाथ से सिली रीढ़ और पारम्परिक बनावट इसे विशिष्ट सौंदर्य प्रदान करती है। कुछ लोग इन्हें डायरी, स्केचबुक या निजी विचार लिखने की पुस्तिका के रूप में प्रयोग करते हैं। इस बदलाव में पुरानी वस्तु के प्रति आकर्षण के साथ उसे नए संदर्भ में अपनाने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। जो किताब कभी व्यापार का हिसाब सँभालती थी, वह अब किसी के अनुभवों, रेखाचित्रों और कल्पनाओं को सहेज सकती है।

पुराने बहीखातों का आकर्षण उनकी बनावट तक सीमित नहीं है। फीकी पड़ती स्याही, पीले होते पन्ने और कपड़े में बंधी जिल्द समय के गुजरने के निशान हैं। उनके भीतर किसी दुकान की शुरुआत, परिवार की मेहनत, पीढ़ियों से चले आ रहे

कारोबार और पुराने सम्बंधों की स्मृतियां सुरक्षित हो सकती हैं। ये किताबें याद दिलाती हैं कि व्यापार का इतिहास केवल मुनाफे और घाटे से नहीं बनता; उसमें लोगों के निर्णय, संघर्ष और एक-दूसरे पर किया गया भरोसा भी शामिल होता है। आज जब अधिकांश हिसाब कुछ क्षणों में डिजिटल रूप से दर्ज हो जाता है, तब बहीखाते की परम्परा हमें उसके पीछे छिपे मूल्यों की ओर लौटकर देखने का अवसर देती है। माध्यम चाहे कागज हो या स्क्रीन, सही लेखांकन के लिए ईमानदारी, स्पष्टता और जिम्मेदारी अनिवार्य हैं। इसी तरह, किसी नए काम की शुरुआत में शुभकामना व्यक्त करना भी केवल एक रस्म नहीं, बल्कि भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का प्रतीक है।

बदलती दुनिया में उसका व्यावहारिक उपयोग कम हो सकता है, लेकिन सांस्कृतिक महत्व बना रह सकता है। लाल कपड़े में बंधी यह साधारण सी पुस्तक हमें यह याद दिलाती है कि परम्परा का मूल्य केवल उसके पुराने होने में नहीं, बल्कि उन विचारों में है जिन्हें वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे पहुंचाती है।





ललित गर्ग

ब्रिक्स देश संवाद को ठोस कार्ययोजना में बदलने में सफल होते हैं, तो यह मंच न केवल विकासशील देशों की आकांक्षाओं को नई दिशा देगा, बल्कि अधिक समावेशी, शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण विश्व-व्यवस्था के निर्माण में भी सार्थक योगदान कर सकेगा।

वैश्विक राजनीति, आर्थिक असमानताओं और बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के बीच संसदीय संवाद की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण होती जा रही है। लोकतंत्र केवल चुनावों और सरकारों के गठन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी वास्तविक सार्थकता इस बात में निहित है कि शासन-व्यवस्था आम नागरिकों की आकांक्षाओं, आवश्यकताओं और अधिकारों के प्रति कितनी संवेदनशील है। इसी संदर्भ में नई दिल्ली के संविधान सदन में 26 और 27 अक्टूबर 2026 को आयोजित 12वां ब्रिक्स संसदीय मंच विशेष महत्व रखता है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन ने जन-केंद्रित विकास, वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं, संसदीय कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार जैसे विषयों पर विचार-विमर्श के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। इसकी मुख्य थीम जन-केंद्रित विकास के लिए संसदों को सशक्त बनाना थी। इस आयोजन के दो प्रमुख उद्देश्य थे-विकास की प्रक्रिया को आम नागरिकों के जीवन से

जोड़ना और वैश्विक शासन-व्यवस्था को अधिक प्रतिनिधिक, न्यायसंगत तथा प्रभावी बनाने की दिशा में संसदीय सहयोग को मजबूत करना। ब्रिक्स संसदीय मंच का पहला और सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य विकास को केवल आर्थिक वृद्धि, व्यापार विस्तार अथवा सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों तक सीमित न रखकर उसे आम नागरिक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाना है। भारत, ब्राजील, चीन, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त अरब अमीरात सहित सदस्य देशों तथा बेलारूस, बोलीविया, क्यूबा, कजाकिस्तान, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, युगांडा, उज्बेकिस्तान और वियतनाम जैसे आमंत्रित भागीदार देशों की भागीदारी ने इस मंच के व्यापक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को रेखांकित किया। इन देशों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियां भिन्न हैं, लेकिन गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, असमानता, पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी परिवर्तन जैसी



चुनौतियां अनेक स्तरों पर समान हैं। ऐसी परिस्थितियों में संसदों का दायित्व केवल कानून बनाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि सरकारी नीतियों का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। संसदीय संस्थाओं को पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिकों के प्रति संवेदनशील बनाने पर सम्मेलन में दिया गया जोर इसी आवश्यकता को व्यक्त करता है। युवाओं की आकांक्षाओं को अवसरों में बदलना, महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना, डिजिटल सुविधाओं को व्यापक बनाना तथा विकास के साथ पर्यावरणीय संतुलन कायम रखना जन-केंद्रित शासन के आवश्यक आधार हैं।

इस संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का उपयोग भी विशेष महत्व रखता है। डिजिटल तकनीक संसदीय शोध, विधायी विश्लेषण, नागरिकों से संवाद और सरकारी योजनाओं की निगरानी को अधिक प्रभावी बना सकती है। किंतु तकनीकी प्रगति तभी वास्तविक जनकल्याण में परिवर्तित होगी, जब उसके साथ व्यक्तिगत आंकड़ों की सुरक्षा, गोपनीयता, समान अवसर और डिजिटल साक्षरता सुनिश्चित की जाए। तकनीक का उद्देश्य नागरिकों को व्यवस्था से जोड़ना होना चाहिए, न कि उन्हें नई असमानताओं के बीच छोड़ देना। इसलिए नवाचार के साथ मानवीय संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का संतुलन आवश्यक है। ब्रिक्स संसदीय मंच का दूसरा प्रमुख उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय निर्णय-प्रक्रिया को अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधिक और न्यायपूर्ण बनाना है। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में अनेक विकासशील देशों का अनुभव है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में उनकी जनसंख्या, आर्थिक सम्भावनाओं और विकास सम्बंधी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रतिनिधित्व नहीं है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और वैश्विक शासन में वैश्विक दक्षिण की अधिक प्रभावी भागीदारी की मांग इसी असंतुलन को दूर करने

का प्रयास है। भारत की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन ने संसदीय कूटनीति को अंतरराष्ट्रीय मतभेदों के बीच संवाद और सहमति का माध्यम बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। संसदीय प्रतिनिधियों के बीच विधायी अनुभवों, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, संस्थागत क्षमता और बेहतर कार्यप्रणालियों का आदान-प्रदान देशों को एक-दूसरे से सीखने का अवसर देता है। इसका महत्व इसलिए भी है कि अंतरराष्ट्रीय सम्बंध केवल सरकारों और राजनयिकों तक सीमित नहीं रहने चाहिए; निर्वाचित प्रतिनिधियों के बीच संवाद से पारस्परिक विश्वास और जनहित आधारित सहयोग को भी मजबूती मिल सकती है।

27 अक्टूबर को सम्मेलन के समापन पर सर्वसम्मति से संयुक्त घोषणापत्र अपनाया जाना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। इसमें संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों, राष्ट्रों की संप्रभु समानता, पारस्परिक सम्मान और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई गई। घोषणापत्र में आतंकवाद, सीमापार आतंकवादी गतिविधियों, आतंकवाद के वित्तपोषण और आतंकवादियों को सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराने की कड़ी निंदा करते हुए इनके विरुद्ध शून्य सहनशीलता की नीति पर बल दिया गया। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार, वैश्विक चुनौतियों से मिलकर निपटने और बहुपक्षीय सहयोग को प्रभावी बनाने की प्रतिबद्धता भी इस विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा रही। हालांकि, किसी भी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की वास्तविक सफलता केवल घोषणाओं और सहमतियों से नहीं मापी जा सकती। उसकी कसौटी यह है कि घोषित उद्देश्यों को ठोस नीतियों, व्यावहारिक सहयोग और समयबद्ध परिणामों में कितना बदला जाता है। सदस्य देशों के बीच राजनीतिक मतभेद, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और आर्थिक हितों की भिन्नता इस दिशा में चुनौतियां प्रस्तुत कर सकती हैं।

सुधार की दिशा में भारत की पहल



बंगाल की खाड़ी में उठे भीषण चक्रवात 'अर्नब' ने कई तटीय राज्यों में तबाही मचाई है जिससे लोगों का सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। 'अर्नब' कहां और किस प्रकार तबाही मचा रहा है और इसका परिणाम क्या होगा, इस आलेख में विस्तृत जानकारी दी गई है।



बंगाल की खाड़ी में अर्नब का कहर

बंगाल की खाड़ी में उठे भीषण चक्रवात 'अर्नब' ने भारत के एक बड़े भू-भाग में व्यापक तबाही मचाई है, जिसके प्रभाव से तटीय राज्यों से लेकर मध्य भारत तक जनजीवन और अर्थव्यवस्था गम्भीर रूप से प्रभावित हुई है। तट से टकराते ही अर्नब ने ओडिशा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्रों में भीषण हवाओं और तूफानी लहरों के साथ पक्के व कच्चे मकानों, बिजली के खम्भों और आधारभूत ढांचे को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। तटीय राज्यों में इस सीधे विनाश के बाद भी अर्नब का प्रकोप शांत नहीं हुआ और इसकी नमी से भरी प्रणाली जैसे ही मध्य भारत की ओर बढ़ी, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के विस्तृत मैदानी भागों में असामयिक मूसलाधार बारिश और ओलावृष्टि का दौर शुरू हो गया। इस असामयिक वर्षा ने खेतों में कटाई के लिए तैयार खड़ी फसलों को जलमग्न कर दिया, जिससे लाखों किसानों की मेहनत पर पानी फिर गया है और देश के समक्ष एक बड़ा कृषि संकट खड़ा हो गया है।

तटीय राज्यों में जब चक्रवात अर्नब प्रचंड गति के साथ टकराया, तो समुद्र में उठी ऊंची लहरों ने तटीय जनसंख्या को बुरी तरह प्रभावित किया। 100 से 150 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चली हवाओं ने बिजली के टावर उखाड़ फेंके, पेड़ गिरा दिए और सड़कों को अवरुद्ध कर दिया जिससे तटीय जिलों का सम्पर्क अन्य क्षेत्रों से कट गया। निचले क्षेत्रों में समुद्री पानी भर जाने से हजारों लोग बेघर हो गए और पीने के पानी के स्रोत दूषित हो गए। यद्यपि समय रहते प्रशासन द्वारा लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया,

लेकिन मछली पकड़ने की नौकाओं, तटीय बाजारों और स्थानीय व्यवसायों को भारी वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ा है। चक्रवात अर्नब का सबसे दीर्घकालिक और चिंताजनक प्रभाव मध्य भारत के कृषि क्षेत्रों पर देखने को मिला है। आमतौर पर तटीय क्षेत्रों को प्रभावित करने के बाद शांत पड़ जाने वाले चक्रवात अब जलवायु परिवर्तन के कारण गहरे आंतरिक मैदानी भागों तक पहुंचकर भारी वर्षा कर रहे हैं। इस समय मध्य भारत में सोयाबीन, धान, मक्का और कपास की फसलें खेतों में पकी खड़ी थीं या कटाई के दौर में थीं। अर्नब के कारण हुई असामयिक बरसात और तेज हवाओं ने फसलों को पूरी तरह बिछा दिया, जिससे दाने सड़ने लगे हैं और उनमें फफूंद लगने लगी है। जो फसलें पहले ही कट चुकी थीं, वे खलिहानों और मंडियों में भीगकर बर्बाद हो गईं। दानों की गुणवत्ता खराब होने से किसानों को बाजार में उनका न्यूनतम समर्थन मूल्य भी नहीं मिल पा रहा है। इसके साथ ही खेतों में भारी जलभराव के कारण रबी फसलों की आगामी बुआई कई हफ्तों के लिए पिछड़ गई है और मिट्टी में अत्यधिक नमी के कारण बुआई का उचित समय बीत जाने का खतरा मंडरा रहा है। हरी सब्जियों, मिर्च और फलदार बागों को भी इस असामयिक बारिश से भारी नुकसान पहुंचा है, जिसके कारण आने वाले समय में आम उपभोक्ता पर भी महंगाई की मार पड़ना तय है।



पंकज चतुर्वेदी

मौसम वैज्ञानिकों और पर्यावरण विशेषज्ञों का स्पष्ट मानना है कि चक्रवात अर्नब का यह विनाशकारी रूप कोई अलग-थलग घटना नहीं है, बल्कि यह जलवायु परिवर्तन का प्रत्यक्ष परिणाम

है। वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण बंगाल की खाड़ी की सतह का तापमान सामान्य से कहीं अधिक रह रहा है। गर्म समुद्र चक्रवातों को अत्यधिक नमी और ऊर्जा प्रदान करता है, जिससे वे बेहद कम समय में शक्तिशाली हो जाते हैं। अर्नब जैसी प्रणालियों में यह देखा गया है कि वे बहुत तेजी से साधारण दबाव से अति-भीषण चक्रवात में परिवर्तित हो जाती हैं, जिससे मौसम एजेंसियों को चेतावनी देने और प्रशासन को निकासी के लिए कम समय मिलता है। वैश्विक वार्मिंग के कारण वायुमंडल में नमी धारण करने की क्षमता बढ़ी है, यही कारण है कि अर्नब तट पार करने के बाद भी तेजी से कमजोर नहीं हुआ और मध्य भारत तक पहुंचकर भारी असामयिक वर्षा का कारण बना।

इस तरह के अभूतपूर्व प्राकृतिक संकटों से निपटने के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा कई संस्थागत उपाय और योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की आधुनिक उपग्रह प्रणाली के ज़रिए अर्नब के पथ का सटीक अनुमान लगाया गया, जिससे तटीय इलाकों से लाखों लोगों को समय रहते सुरक्षित चक्रवात आश्रय स्थलों में पहुंचाया जा सका। असामयिक वर्षा या चक्रवात से खेतों में खड़ी अथवा कटाई के बाद सुखाने रखी गई फसलों के नुकसान की भरपाई के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत दावों का निपटान किया जाता है और फसल क्षति का त्वरित आकलन करने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग बढ़ाया जा रहा है। इसके अलावा प्रभावित राज्यों को पुनर्वास, सड़कें दुरुस्त करने, बिजली बहाल करने और प्रभावित परिवारों को अनुग्रह राशि देने के लिए राष्ट्रीय व राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष से तुरंत सहायता राशि जारी की जा रही है। चक्रवात अर्नब ने स्पष्ट कर दिया है कि प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए केवल अल्पकालिक राहत कार्य पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि हमें दीर्घकालिक योजनाएं बनानी होंगी।

किसानों को जलभराव और अनिश्चित मौसम को झेलने में सक्षम फसल प्रजातियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव जंगलों का दायरा बढ़ाना होगा जो प्राकृतिक अवरोधक के रूप में समुद्री तूफानों की तीव्रता को कम करते हैं। मध्य भारत के कृषि क्षेत्रों में जल निकासी के ढांचे को आधुनिक बनाना होगा ताकि मूसलाधार असामयिक बारिश का पानी खेतों में लम्बे समय तक न ठहरा रहे। चक्रवात अर्नब द्वारा तटीय क्षेत्रों में ढहाई गई तबाही और मध्य भारत के खेतों में फसलों का विनाश इस बात की चेतावनी है कि जलवायु परिवर्तन अब सीधे तौर पर हमारी खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर हमला कर रहा है।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा! जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सहस्यता **सेवा विवेक ग्रंथ**

मूल्य ₹ 500 + मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।
Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका



हिंदी विवेक

"We Work For A Better World"



सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : **₹. 500/-**
- त्रैवार्षिक मूल्य : **₹. 1,200/-**
- पंचवार्षिक मूल्य : **₹. 1,800/-**
- संरक्षक मूल्य : **₹. 25,000/-**
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : **₹. 5,000/-**

**खुद
ग्राहक बनें
व बनाएं**

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : **+91 95949 91884**

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

नसीरुद्दीन शाह के बिगड़े बोल

नसीरुद्दीन शाह की जुबान फिसलते ही वे विवादों में घिर गए। ये ऐसे पहले कलाकार नहीं हैं, जिनकी जुबान फिसली है। इसके पहले भी आमिर खान, शाहरुख खान, संजय दत्त, दीपिका पादुकोण, प्रकाश राज और स्वरा भास्कर जैसे फिल्म कलाकार भी अपने विवादित बयानों के कारण चर्चा में रहे हैं।

विवादित



रामेन्द्र सिन्हा



नामचीन अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने हाल ही में केंद्र सरकार की नीतियों और उनके आलोचकों को दिए जाने वाले नामों पर तीखा हमला बोलते हुए स्वयं को 'दिमागी नक्सल' बताया है। शाह वर्ष 2014 के बाद से केंद्र की भाजपानीत सरकार और उसकी नीतियों के सबसे तीखे आलोचकों में से एक रहे हैं।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जेएनयू और सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट में छात्रों के मुद्दों और विरोध प्रदर्शनों का समर्थन करते हुए शाह ने एक वीडियो जारी करते हुए कहा कि वह फख्र से कहते हैं कि वह एक 'दिमागी नक्सल' हैं। उन्होंने कहा कि सरकार और उनके समर्थकों द्वारा आलोचकों को 'एंटी-नेशनल' और 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' जैसे नाम दिए जाते हैं। टुकड़े-टुकड़े गैंग अगर कोई है इस मुल्क में तो वो यह नाजायज हुकूमत है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार देश के नौजवानों की हिम्मत तोड़ने, शिक्षा संस्थाओं को

बर्बाद करने और लोकतंत्र को खतरे में डालने का काम कर रही है।

हालांकि, जामिया मिल्लिया इस्लामिया परिसर की दीवारों पर 'फ्री कश्मीर' (आजाद कश्मीर) और 'फ्री शरजिल इमाम' (शरजिल इमाम को रिहा करो) और 'डेथ ऑफ आरएसएस, बीजेपी जैसे भड़काऊ नारों के बारे में शाह कुछ नहीं बोलते। न ही, शाह को सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट कैम्पस में एक दक्षिणपंथी संगठन (अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत एबीजीपी) द्वारा आयोजित कार्यक्रम को लेकर छात्रों के एक समूह के रवैये पर आपत्ति हुई। जबकि, संस्थान की एक आंतरिक रिपोर्ट में दावा किया गया कि वामपंथी छात्र संगठन (एसएफआई) से जुड़े छात्रों ने कथित तौर पर हिंदू विरोधी नारे लगाए थे, कार्यक्रम के पोस्टरों को फाड़ा और कुलपति के कार्यालय में तोड़फोड़ कर उनके साथ अभद्रता की।

बोले तो, नसीरुद्दीन शाह के ताजा वीडियो के बाद

केंद्रीय मंत्री किरें रिजिजू ने उनके बयान को लोकतंत्र के लिए बेहद हानिकारक बताया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि वह पहले शाह का सम्मान करते थे, लेकिन उन्हें अंदाजा नहीं था कि वे एक खतरनाक अर्बन (शहरी) नक्सल हैं। महाराष्ट्र के मंत्री नितेश राणे ने शाह पर निशाना साधते हुए कहा कि वह 'पाकिस्तान की स्क्रिप्ट' पढ़ने के लिए पैसे लेते हैं और उन्हें अपना बैग पैक करके पाकिस्तान चले जाना चाहिए।

अभिनेता गजेंद्र चौहान ने नसीरुद्दीन शाह के बयान पर अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, 'अगर आपको सरकार का इतना विरोध करना है तो चुनाव क्यों नहीं लड़ते? चुनाव लड़िए।' गजेंद्र चौहान यहीं नहीं रुके। उन्होंने नसीरुद्दीन शाह को सीधी चुनौती देते हुए कहा 'मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप जहाँ से भी चुनाव लड़ेंगे, मैं आपके खिलाफ चुनाव लड़ूंगा और आपको हराकर दिखाऊंगा।' अभिनेता पुनीत इस्सर, फिल्म निर्माता अशोक पंडित आदि ने भी शाह के बयान की आलोचना की।

नसीरुद्दीन शाह पिछले एक दशक में अपने कई बयानों के कारण विवादों में रहे हैं। दिसम्बर 2018 में उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में हुई गोकशी के शक में भड़की हिंसा (जिसमें एक पुलिस इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की मौत हो गई थी) के बाद शाह ने एक वीडियो इंटरव्यू में कहा था, आज के भारत में एक पुलिस अफसर की मौत से ज्यादा एक गाय की मौत को अहमियत दी जा रही है। मुझे अपने बच्चों के लिए डर लगता है क्योंकि कल को अगर कोई भीड़ उन्हें घेरकर पूछेगी कि तुम हिंदू हो या मुसलमान, तो उनके पास कोई जवाब नहीं होगा (क्योंकि उन्होंने अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा नहीं दी है)।

2019 में जब देश में नागरिकता संशोधन कानून और भारतीय राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर को लेकर देशव्यापी प्रदर्शन चल रहे थे, तब शाह ने सरकार की मंशा पर सवाल उठाए थे, संविधान हमें बराबरी का हक देता है, लेकिन आज ऐसा माहौल बनाया जा रहा है जहाँ एक विशेष समुदाय को अपनी देशभक्ति साबित करने के लिए कागजात दिखाने को मजबूर किया जा रहा है। यदि आप सरकार की नीतियों का विरोध करते हैं, तो आपको सीधे 'पाकिस्तानी' या 'देशद्रोही' करार दे दिया

जाता है।

2021 में एक मीडिया पोर्टल को दिए इंटरव्यू में शाह ने कहा था, भारत में मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बनाने की एक सोची-समझी कोशिश की जा रही है। हमें हर कदम पर डराने और यह अनुभव कराने का प्रयास किया जा रहा है कि हम इस देश के मूल निवासी नहीं हैं। ... मैं सरकार से कहना चाहता हूँ कि देश के 20 करोड़ मुसलमान इतनी आसानी से नष्ट नहीं होने वाले। हम यहीं के हैं, हमारा जन्म यहीं हुआ है और हम अपने हक के लिए लड़ेंगे।

अल्पसंख्यक पहचान और इतिहास से मुगलों के नाम हटाए जाने का आरोप लगाते हुए शाह ने बयान दिया था, मुगल भारत में लूटपाट करने नहीं आए थे। वे यहीं बस गए, उन्होंने यहां की संस्कृति, वास्तुकला और संगीत में अपना योगदान दिया। आज मुगलों को पूरी तरह से क्रूर और हिंदू-विरोधी दिखाकर वर्तमान पीढ़ी के मन में मुसलमानों के प्रति नफरत का बीज बोया जा रहा है।

नसीरुद्दीन शाह ने बॉलीवुड में बन रही राष्ट्रवाद से प्रेरित फिल्मों (जैसे द कश्मीर फाइल्स और द केरल स्टोरी) और उन निर्देशकों पर भी तीखा हमला बोला, आजकल सिनेमा का प्रयोग नफरत फैलाने और सरकार की तारीफ करने के औजार के रूप में किया जा रहा है। यह बेहद चिंताजनक है कि नफरत भरी फिल्मों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जबकि अच्छी और संवेदनशील फिल्मों को दबाया जा रहा है। फिल्म इंडस्ट्री के बड़े नाम डर के मारे चुप हैं। फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री और अनुपम खेर सहित कई फिल्मी हस्तियों ने शाह के इन बयानों को 'कुंठित' और 'एकतरफा' बताया था।

शाह की तरह ही आमिर खान, शाहरुख खान, संजय दत्त, दीपिका पादुकोण, प्रकाश राज और स्वरा भास्कर जैसे फिल्म कलाकार भी अपने विवादित बयानों के कारण चर्चा में रहे हैं। इन बयानों पर प्रतिक्रिया देते हुए दक्षिणपंथी विचारकों और बीजेपी नेताओं का तर्क रहा है कि नसीरुद्दीन शाह जैसे बुद्धिजीवी 'विक्टिम कार्ड' खेलते हैं। आलोचकों का कहना है कि भारत में सभी अल्पसंख्यक पूरी तरह सुरक्षित हैं और शाह के बयान केवल वैश्विक मंच पर भारत की छवि को 'असहिष्णु राष्ट्र' के रूप में प्रस्तुत करने का एक एजेंडा हैं।



त्योहारों से आर्थिकी को बढ़ावा

त्योहार अर्थव्यवस्था को बड़ा प्रोत्साहन देते हैं। इसका स्थायी लाभ तभी होगा, जब बढ़ी हुई मांग से घरेलू उत्पादन बढ़े, छोटे कारोबारों की आय में बढ़ोत्तरी हो और बेहतर रोजगार के अवसर बनें।

प्रभाव

त्योहारों के दौरान बाजारों की रौनक केवल आनंद ही नहीं बढ़ाती, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी मजबूती देती है, क्योंकि इस समय कई क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां तेज हो जाती हैं। कपड़ों, मिठाइयों, आभूषणों और वाहनों पर होने वाला खर्च मांग बढ़ाता है, जिसके चलते इन वस्तुओं की आपूर्ति भी बढ़ानी पड़ती है। दुकानदारों की बिक्री बढ़ने से निर्माताओं को नए ऑर्डर मिलते हैं और सामान पहुंचाने वालों को अतिरिक्त काम मिलता है। इस तरह त्योहार उपभोग, उत्पादन और रोजगार के बीच सम्बंधों को मजबूत करते हैं। हालांकि, उनके आर्थिक प्रभाव का सही आकलन करना मुश्किल है, क्योंकि त्योहारों से पैदा होने वाली अधिकांश मांग असंगठित क्षेत्र में होती है, जहां उसका मानकीकरण सम्भव नहीं है।

जीडीपी और घरेलू मांग को सहारा

भारत की अर्थव्यवस्था में घरेलू उपभोग की अहम भूमिका है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के जून 2026 में जारी अनंतिम अनुमानों के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में निजी अंतिम उपभोग व्यय का चालू कीमतों पर जीडीपी में हिस्सा 56.7 प्रतिशत था। यह पूरे साल के उपभोग का आंकड़ा है, केवल त्योहारों के दौरान हुई खरीदारी का नहीं। फिर भी, इससे स्पष्ट है कि परिवारों का खर्च आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण आधार है और त्योहारों पर किए गए खर्च का बड़ा योगदान है। त्योहारों का जीडीपी में कितना निश्चित प्रतिशत योगदान है, इसका कोई आधिकारिक आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। उनका योगदान विनिर्माण, व्यापार, परिवहन और सेवा



सतीश सिंह

क्षेत्रों में शामिल होता है।

लाखों करोड़ का बाजार

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने 60 प्रमुख वितरण केंद्रों के सर्वेक्षण के आधार पर दिवाली 2025 के कारोबार का अनुमान 6.05 लाख करोड़ रुपये लगाया। इसके अनुसार, वस्तुओं का कारोबार 5.40 लाख करोड़ रुपये और सेवाओं का 65,000 करोड़ रुपये रहने की आशा थी। यह व्यापारिक संगठन का आकलन है, सरकारी राष्ट्रीय लेखा आंकड़ा नहीं। फिर भी, इससे त्योहारी बाजार का व्यापक आकार और विभिन्न क्षेत्रों में मांग का फैलाव सामने आता है। त्योहारी बिक्री कारोबारियों की नकदी स्थिति सुधार सकती है। पुराना भंडार बिकने से नई खरीद और आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान करना आसान होता है। छोटे उद्यमों के लिए यह विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उनकी उत्पादन क्षमता अधिकांश कार्यशील पूंजी की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

अनेक क्षेत्रों तक पहुंचता लाभ

कैट के सर्वेक्षण के अनुसार, त्योहारी वस्तुओं की कुल बिक्री में किराना और दैनिक उपभोग की वस्तुओं की हिस्सेदारी 12 प्रतिशत, सोने और आभूषणों की 10 प्रतिशत, इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिकल्स की 8 प्रतिशत तथा तैयार कपड़ों और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की 7-7 प्रतिशत रही। उल्लेखनीय है कि ये आंकड़े बिक्री में हिस्सेदारी दर्शाते हैं, सम्बंधित क्षेत्रों की वृद्धि दर नहीं।

खाद्य कारोबार बढ़ने से दूध, चीनी, खाद्य तेल, मेवे और पैकेजिंग की मांग में बढ़ोत्तरी होती है। कपड़ों की खरीद से बुनाई, सिलाई, रंगाई और खुदरा व्यापार को काम मिलता है। घर की मरम्मत और सजावट से पेंट, बिजली के सामान, फर्नीचर और बर्तन-मिश्री की सेवाओं को बढ़ावा मिलता है। इस तरह उपभोक्ता का खर्च कई आपूर्तिकर्ताओं की आय बन जाता है। जब उस आय का कुछ हिस्सा फिर से खर्च होता है, तो आर्थिक गतिविधियों का दायरा और बढ़ता है।

वाहन बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि

त्योहारी मांग का ठोस उदाहरण वाहन बाजार में देखने को मिलता है। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस के अनुसार, 22 सितम्बर से 2 नवम्बर 2025 के बीच 42 दिनों में 52.38 लाख वाहनों की खुदरा बिक्री हुई। पिछले तुलनीय त्योहारी दौर में बिक्री 43.26 लाख इकाइयों की तुलना में यह 21.10 प्रतिशत अधिक थी। दोपहिया वाहनों की बिक्री 21.80 प्रतिशत, यात्री वाहनों की 23.39 प्रतिशत और ट्रैक्टरों की 14.22 प्रतिशत बढ़ी।

इसका फायदा वाहन निर्माताओं के अलावा कलपुर्जों, टायर, बीमा, ऋण और सर्विसिंग कारोबार को भी मिलता है। हालांकि, वृद्धि पर कर दरों में बदलाव, ग्रामीण आय, वित्तपोषण और पहले टली खरीद का भी असर पड़ता है। इन कारकों के साथ त्योहारी माहौल खरीद के फैसलों को गति देता है।

रोजगार और अतिरिक्त आय

बढ़े हुए ऑर्डर सम्भालने के लिए बिक्री कर्मचारियों, पैकिंग श्रमिकों, गोदाम सहायकों, चालकों और वितरण कर्मियों की अधिक ज़रूरत होती है। अमेजन इंडिया ने सितम्बर 2026 में अपने परिचालन नेटवर्क में 1.60 लाख से अधिक मौसमी कार्य अवसर सृजित करने की घोषणा की। कम्पनी के अनुसार, ये प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अवसर 400 से अधिक शहरों में उपलब्ध थे।

टीमलीज ने 2025 के त्योहारी मौसम में विभिन्न क्षेत्रों में 2.16 लाख से अधिक अस्थायी नौकरियों का अनुमान लगाया था। इन आंकड़ों को जोड़कर राष्ट्रीय रोजगार का आंकड़ा निकालना उचित नहीं होगा, क्योंकि उनका दायरा अलग-अलग है और दोहरी गिनती की आशंका है। फिर भी, ये उदाहरण बताते हैं कि त्योहारी मांग का रोजगार पर क्या प्रभाव पड़ता है।

मौसमी रोजगार से परिवारों को अतिरिक्त आय मिलती है, लेकिन इसका वास्तविक लाभ वेतन, काम के घंटों, यात्रा खर्च और रोजगार की अवधि पर निर्भर करता है। उचित वेतन और सुरक्षित कार्यस्थितियाँ इस लाभ को और सार्थक बनाती हैं।

स्थानीय कारोबार और सेवाओं को प्रोत्साहन

दीये, मूर्तियां, फूल, हस्तशिल्प और घरेलू खाद्य उत्पादों की खरीद से कुम्हारों, बुनकरों और छोटे उद्यमियों को सीधे आय मिलती है। जब उत्पादन में स्थानीय श्रम और सामग्री का अधिक उपयोग होता है, तो इस खर्च का लाभ स्थानीय अर्थव्यवस्था में व्यापक रूप से फैलता है। घर लौटने की यात्राओं और धार्मिक पर्यटन से होटल, भोजनालय, रेल, बस तथा स्थानीय परिवहन की मांग बढ़ती है। ग्रामीण बाजारों में खरीदने की क्षमता फसल से होने वाली आय और मजदूरी पर निर्भर करती है।

टिकाऊ खरीद से टिकाऊ समृद्धि

बिक्री मूल्य में बढ़ोत्तरी की वजह कीमतें बढ़ना भी हो सकती हैं, इससे यह साबित नहीं होता कि वस्तुओं की मात्रा भी उतनी ही बढ़ी है। कुछ खरीदारी आने वाले महीनों से पहले ही हो जाती है। भारी छूट कारोबारियों का मुनाफा घटा सकती है, जबकि गैरजरूरी किस्तें परिवारों की भविष्य में खरीदने की क्षमता सीमित कर सकती हैं।



जीआई टैग

मिठाई की विरासत

भारतीय मिठाईयों की सुगंध विदेशों तक फैली है। कई ऐसी मिठाईयां हैं जिनको जीआई टैग भी मिला है, तो चलिए आप भी इन मिठाईयों के बारे में जानिए।

मिठाईयों की बात की जाए तो भारतीय मिठाईयों की बात ही निराली है। इसका स्वाद और सुगंध दोनों पर ही किसी का भी जी ललचाता है। जी हां! इन मिठाईयों में से कई ऐसी मिठाईयां भी हैं जिन्हें जीआई टैग भी मिला है। जीआई टैग वाली मिठाईयां अपने अनोखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध हैं। आइए, जानते हैं भारत की 10 खास जीआई टैग वाली मिठाईयों के बारे में जो अपने क्षेत्र की अनमोल पहचान हैं।

सिलाव का खाजा (बिहार)

बिहार के नालंदा जिले के सिलाव का खाजा बेहद स्वादिष्ट होता है। सिलाव कस्बे की यह कुरकुरी मिठाई मुरारिया गेहूं, गुड़ और देसी घी से बनाई जाती है। इसकी परतदार बनावट और अनोखा स्वाद इसे विशेष बनाता है। नालंदा जिले के सिलाओ क्षेत्र की यह परतदार और कुरकुरी मिठाई को वर्ष 2018 में टैग मिला। आज भी

लोग इसे बेहद पसंद से खाते हैं और आगे भी खाने की इच्छा रखते हैं।

बर्धमान का मिहिदाना (पश्चिम बंगाल)

यह बारीक बूंदी जैसी मिठाई गोविंदभोग या कामिनिभोग चावल से बनाई जाती है जो केवल बर्धमान क्षेत्र में उगाए जाते हैं। इसका स्वाद हल्का और सुगंधित होता है।

श्रीविल्लिपुथुर पालकोवा (तमिलनाडु)

10 लीटर दूध से तैयार होने वाली यह मिठाई तमिलनाडु के श्रीविल्लिपुथुर की विशेषता है। इसे केवल दूध और चीनी से बनाया जाता है और इसका स्वाद गाढ़ा व मलाईदार होता है। जिसपर किसी का भी दिल मचल उठता है।

बर्धमान का सितभोग (पश्चिम बंगाल)

चावल जैसी दिखने वाली यह मिठाई छोटे गुलाब जामुन के टुकड़ों के साथ परोसी जाती है। इसे भी गोविंदभोग चावल के आटे से बनाया



स्निग्धा अवतंस

जाता है और यह बेहद अनोखी मिठाई है।

जयनगरेर मोया (पश्चिम बंगाल)

सिर्फ सर्दियों में बनने वाली यह मिठाई कनकचूर धान और नोलन गुड़ (खजूर का गुड़) से तैयार की जाती है। इसका स्वाद और सुगंध अत्यंत विशेष होता है।

धारवाड़ पेड़ा (कर्नाटक)

धारवाड़ की यह प्रसिद्ध मिठाई उत्तर प्रदेश से आए ठाकुर परिवार ने बनाई थी। यह पेड़ा आज कर्नाटक की पहचान बन चुका है और इसकी रेसिपी पीढ़ियों से चली आ रही है। धारवाड़ की विशेष धीमी आंच पर पकाई जाने वाली दूध आधारित मिठाई है। जो हर लोगों को पसंद आती है।

बंगाल का रसोगोला

नबीन चंद्र दास द्वारा 200 साल पहले बनाई गई इस रसोगोला की बनावट, रंग और मिठास ओडिशा की रसगुल्ला से काफी अलग है। इसे जीआई टैग प्राप्त है और यह बंगाल की विशेष पहचान है।

ओडिशा रसगुल्ला

ओडिशा की यह रसगुल्ला 'माउथ मेल्टिंग' टेक्सचर के लिए प्रसिद्ध है। इसकी स्पंजी बनावट और हल्की मिठास इसे अलग पहचान देती है।

कोविलपट्टी कडलाई मित्ताई (तमिलनाडु)

कोविलपट्टी में बनने वाली यह मिठाई गुड़ और भुनी मूंगफली से तैयार की जाती है। यह हेल्दी और टेस्टी स्नैक के तौर पर बेहद लोकप्रिय है।

गुड़ और भुनी हुई मूंगफली से तैयार की जाने वाली पौष्टिक चिक्की जैसी मिठाई।

तिरुपति लड्डू (आंध्र प्रदेश)

तिरुमला मंदिर में प्रसाद के रूप में मिलने वाले यह लड्डू जीआई टैग प्राप्त हैं। इन्हें 'पोटू' नामक विशेष स्थान पर शुद्ध देशी घी से बनाया जाता है।

चैक-हाओ खीर (मणिपुर): मणिपुर के काले चावल से बनाई जाने वाली पारम्परिक खीर (वर्ष 2014 में टैग मिला)।

कई ऐसी भारतीय मिठाईयां हैं जिसको लोग देश में ही नहीं विदेशों में भी पसंद करते हैं। इसकी सुगंध के दीवाने विदेशों में भी हैं।

जिनमें गुलाब जामुन, जलेबी, काजू कतली, रसबुल्ला / रसगुल्ला और मैसूर पाक का नाम सबसे ऊपर आता है।

मैसूर पाक:

कर्नाटक के मैसूर पैलेस से शुरू हुई यह बेसन, घी और चीनी से बनी मिठाई दुनिया की बेहतरीन मिठाइयों की सूची में शामिल रही है। जिसके स्वाद के लोग दीवाने हैं।

गुलाब जामुन:

यह हर मन को भाती है। यह चाशनी में डूबी हुई खोए की गेंदें पूरे विश्व में रहने वाले भारतीयों और विदेशी लोगों के बीच सबसे प्रसिद्ध और पसंदीदा मिठाई है। कोई भी

त्योहार हो या मंगल आयोजन हो तो सहज ही लोग गुलाब जामुन खाना पसंद करते हैं।

जलेबी: जलेबी का नाम और स्वाद किसने नहीं चखा होगा। अपनी खास घुमावदार आकृति और चाशनी के स्वाद के लिए जलेबी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत पसंद किया जाता है। कुछ लोग दही- जलेबी, रबड़ी-जलेबी को बेहद चाव से खाते हैं।

काजू कतली: काजू और चीनी से बनी यह पतली बर्फी प्रीमियम गिफ्टिंग और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में खूब पसंद की जाती है।

कुल्फी और कुल्फी फालूदा: पारम्परिक भारतीय आइसक्रीम के रूप में कुल्फी को ग्लोबल डेसर्ट की लिस्ट में विशेष स्थान मिला है।



प्रदूषण

स्वच्छ हवा कोई विलासिता नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की आधारभूत आवश्यकता है। आने वाली पीढ़ियों को प्रदूषित वातावरण सौंपना विकास नहीं, बल्कि उनके भविष्य के साथ अन्याय होगा।

दि

ल्लि-एनसीआर में प्रदूषण से जुड़े एक मामले में पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दीपावली के बाद दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति बेहद खराब हो जाएगी। हवा से बचने के लिए जज घर बैठे नहीं रह सकते, अदालत चलाने के लिए जज को कोर्ट आना पड़ता है। वहीं किसी अन्य मामले में न्यायमूर्ति एम.एम. सुंदरेश और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की खंडपीठ ने कहा कि हम पटाखे पर न तो पूरी तरह प्रतिबंध लगाने के पक्ष में हैं और न ही हम उन्हें 24 घंटे चलाने के पक्ष में हैं।

ऐसे में सवाल यह है कि न्यायपालिका के पास प्रदूषण का मसला क्यों आया है और न्यायपालिका क्यों प्रदूषण को लेकर अपनी चिंता क्यों व्यक्त कर रहा है। स्वच्छ हवा, निर्मल जल और हरियाली प्रकृति के अनमोल उपहार हैं और इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। हवा और जल के बिना जिंदगी की डोर बनी नहीं रह सकती है। मगर मनुष्य ने अपनी विकास यात्रा के जरिए इस प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के साथ जो छेड़छाड़ की है, उसका परिणाम आज लोगों की सांसों में घुल रहा है।

भारत त्योहारों का देश है। दीपावली, दशहरा, छठ और अन्य पर्व हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक एकता और उत्सवधर्मिता के प्रतीक हैं। त्योहारों का उद्देश्य जीवन में प्रकाश फैलाना है, न कि वातावरण में अंधेरा और धुआं बढ़ाना। त्योहारों के आसपास देश के कई शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। पिछले कुछ वर्षों से मेट्रो शहरों में विशेषकर बड़े शहरों में अधिकतर दीपावली के बाद चाहे पटाखों के कारण हो या फिर पराली के जलाने के कारण

घुटती जिंदगी व समाधान की खोज

पूरा आसमान धुआं और धुंध से छाया रहता है। सांस लेना एक चुनौती बन चुकी है। धूल एवं धुआं से हर व्यक्ति परेशान है। प्रदूषण पर्यावरण के साथ-साथ जनस्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और जीवन की गुणवत्ता के तौर पर राष्ट्रीय संकट बन चुका है। पटाखों से निकलने वाला धुआं, सूक्ष्म कण और हानिकारक गैसों वातावरण की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। आसमान में छाई धुंध, आंखों में जलन, गले में खराश और सांस लेने में परेशानी लोगों को इस संकट का प्रत्यक्ष अनुभव कराती है।

पंजाब, हरियाणा और आसपास के क्षेत्रों में पराली जलाने से निकलने वाला धुआं भी कुछ परिस्थितियों में प्रदूषण बढ़ाने में योगदान देता है। वाहनों से निकलने वाला धुआं, निर्माण कार्यों की धूल, औद्योगिक उत्सर्जन और सड़कों पर उड़ने वाली धूल पहले से ही वातावरण में प्रदूषकों का बोझ बढ़ा रहे होते हैं। ऐसे में सवाल है कि प्रदूषण किसी एक व्यक्ति, संस्था या गतिविधि का परिणाम है या नहीं है। जाहिर है कि इसके पीछे कई कारण हैं, जो मिलकर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। इसका पहला प्रमुख कारण वाहनों की बढ़ती संख्या है। दूसरा कारण औद्योगीकरण और निर्माण गतिविधियां हैं। तीसरा कारण कृषि अवशेषों का अनुचित निपटान है। पराली जलाना किसानों के सामने मौजूद समय, श्रम और आर्थिक दबावों से भी जुड़ा है। प्रदूषण की समस्या हवा तक सीमित नहीं है; यह जल, मिट्टी और समग्र पारिस्थितिकी को प्रभावित करती है।

प्रदूषण का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ता है। दिहाड़ी मजदूर, सड़क किनारे काम करने वाले लोग, यातायात पुलिसकर्मी और खुले



डॉ. विनीत उत्पल

वातावरण में काम करने वाले अन्य कर्मचारी लम्बे समय तक प्रदूषित हवा के स्पर्क में रहते हैं। बच्चों, बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों को प्रदूषण काफी प्रभावित करती है। ऐसे में प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए किसी एक उपाय पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। इसके लिए दीर्घकालिक नीति, प्रभावी क्रियान्वयन और नागरिक सहभागिता आवश्यक है। एक और जहां सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुविधाजनक, सुलभ और किफायती बनाया जाना चाहिए। मेट्रो, इलेक्ट्रिक बसों और साइकिल चलाने के लिए सुरक्षित मार्ग विकसित किए जाने चाहिए। वाहनों की नियमित जांच और उत्सर्जन मानकों का सख्ती से पालन भी आवश्यक है। वहीं, उद्योगों और निर्माण स्थलों पर प्रदूषण नियंत्रण के नियमों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाना चाहिए। निर्माण सामग्री को ढकना, धूल को नियंत्रित करना, कचरे का वैज्ञानिक निपटान और खुले में कचरा जलाने पर रोक जैसे उपाय स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

पराती की समस्या के समाधान के लिए किसानों को मशीनों, आर्थिक सहायता और फसल अवशेषों के उपयोग से जुड़े व्यावहारिक विकल्प उपलब्ध कराने चाहिए। कृषि अवशेषों से

जैव ईंधन, खाद और अन्य उपयोगी उत्पाद तैयार करने की सम्भावनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिल सकता है। त्योहारों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है। दीपावली पर मिट्टी के दीपक जलाना, बिजली की ऊर्जा-कुशल सजावट अपनाना, सामुदायिक स्तर पर सीमित और जिम्मेदार उत्सव आयोजित करना तथा पटाखों के उपयोग से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूकता बढ़ाना उपयोगी कदम हैं। ग्रीन दीपावली मनाना भी कारगर उपाय है। स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना होगा। सौर और पवन ऊर्जा जैसे विकल्पों का विस्तार, ऊर्जा की बचत और स्वच्छ तकनीकों का उपयोग प्रदूषण कम करने में सहायक हो सकते हैं। शहरों में हरित क्षेत्र विकसित करना और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल वृक्षारोपण करना भी आवश्यक है। पौधे लगाने के साथ-साथ उनकी देखभाल और संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

प्रदूषण से निदान पाने में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। कचरा अलग-अलग करना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, ऊर्जा की बचत करना और पर्यावरण संबंधी नियमों का पालन करना आदि महत्वपूर्ण कदम हैं। ***

प्रबंधन

छोटे शहर हों या महानगर हर जगह आवारा कुत्तों का आतंक दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। जिससे आम जनता को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आखिर इसका क्या समाधान है, इस आलेख में विस्तृत चर्चा की गई है।



आवारा कुत्तों का बढ़ता आतंक

छोटे शहरों से लेकर देश के बड़े महानगरों तक आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और उनके कारण होने वाली घटनाएं आज एक गम्भीर सामाजिक समस्या बनती जा रही हैं। सुबह की सैर पर निकलने वाले बुजुर्ग हों, स्कूल जाने वाले बच्चे हों, दोपहिया वाहन चालक हों या देर रात काम से घर लौटने वाले नागरिक, अनेक लोगों को रास्तों पर घूमने वाले कुत्तों के झुंड से भय का सामना करना पड़ता है। कई स्थानों पर कुत्तों के काटने की घटनाएं भी सामने आती रहती हैं। विशेष रूप से बच्चों और बुजुर्गों के लिए यह स्थिति अधिक चिंताजनक है।

आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ने के पीछे कई कारण हैं। शहरों और कस्बों में खुले में फेंका जाने वाला भोजन, होटल और बाजारों का कचरा, मांस-मछली की दुकानों के आसपास जमा होने वाला अपशिष्ट तथा खुले कूड़ाघर इनके लिए भोजन का सहज स्रोत बन जाते हैं। जहां नियमित रूप से भोजन उपलब्ध होता है, वहां कुत्तों का जमावड़ा बढ़ने लगता है।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण कुत्तों की अनियंत्रित प्रजनन प्रक्रिया है। यदि किसी क्षेत्र में नर और मादा कुत्तों की नसबंदी का अभियान नियमित और प्रभावी ढंग से नहीं चलाया जाता, तो कुछ ही वर्षों में उनकी संख्या तेजी से बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त, कई बार पालतू कुत्तों को भी लोग लावारिस छोड़ देते हैं, जिससे समस्या और गम्भीर हो जाती है।

इसलिए केवल कुत्तों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा देना स्थायी समाधान नहीं है। जब तक भोजन के स्रोतों का उचित प्रबंधन और

नसबंदी की व्यवस्था नहीं होगी, तब तक उनकी संख्या नियंत्रित करना मुश्किल रहेगा।

आवारा कुत्तों की संख्या नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी और मानवीय तरीका वैज्ञानिक पद्धति से नसबंदी करना है। इसके लिए नगर निगम, नगर पालिका और संबंधित प्रशासन को व्यवस्थित अभियान चलाना चाहिए।

पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत कुत्तों को मानवीय तरीके से पकड़कर अधिकृत पशु चिकित्सालय या निर्धारित केंद्र में ले जाया जाए। वहां उनकी स्वास्थ्य जांच, नसबंदी और एंटी-रेबीज टीकाकरण किया जाए। ऑपरेशन के बाद पूरी तरह स्वस्थ होने पर उन्हें नियमानुसार उसी क्षेत्र में वापस छोड़ा जाए।

यह प्रक्रिया केवल एक बार करके छोड़ने की नहीं। हर क्षेत्र में कुत्तों की संख्या का नियमित सर्वे, नसबंदी और टीकाकरण की व्यवस्था होनी चाहिए। जिन क्षेत्रों में नसबंदी का प्रतिशत कम है, वहां विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए।

विशेष डॉग कैचर टीम का गठन

कुत्तों की सूंघने की क्षमता बेहद तेज होती है। कई बार डॉग कैचर टीम के पहुंचने से पहले ही वे कर्मचारियों की गंध, वाहनों या उपकरणों की परिचित गंध पहचानकर सतर्क हो जाते हैं और छिप जाते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए पकड़ने वाली टीम को नियमित रूप से अलग-अलग प्रशिक्षित कर्मचारियों के साथ अभियान चलाना चाहिए। कुत्तों के रोजाना के व्यवहार और ठिकानों का पहले से अध्ययन किया जाए। बिना शोर-शराबे के, उचित दूरी



डॉ. ईलेवान ठाकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक



पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी
विवेक
"We Work For A Better World"

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य
₹250/-



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता या सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of

HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

और सुरक्षित जाल की मदद से मानवीय तरीके से उन्हें पकड़ा जाए। साथ ही, पशु व्यवहार विशेषज्ञों की सहायता लेकर ऐसी रणनीति बनाई जाए, जिससे कुत्तों में भय पैदा किए बिना अभियान सफल हो सके। इसलिये प्रत्येक नगर निगम और नगर पालिका में प्रशिक्षित कर्मचारियों की अलग टीम बनाई जाए। उनके पास सुरक्षित जाल, उपयुक्त कैरियर वाहन और आवश्यक उपकरण उपलब्ध हों।

डिजिटल सर्वे और पहचान

शहर के प्रत्येक वार्ड में आवारा कुत्तों की संख्या, उनकी गतिविधियों, नसबंदी और टीकाकरण की स्थिति का रिकॉर्ड तैयार किया जाए। नसबंदी किए गए कुत्तों की पहचान कान पर निर्धारित निशान से की जा सकती है।

शिकायत हेल्पलाइन

नागरिकों के लिए एक विशेष हेल्पलाइन या ऑनलाइन शिकायत व्यवस्था हो, जहां आक्रामक व्यवहार करने वाले कुत्तों, झुंड और काटने की घटनाओं की जानकारी दी जा सके।

विशेष अभियान

स्कूलों, अस्पतालों, बाजारों, सार्वजनिक उद्यानों और अधिक भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में प्राथमिकता के आधार पर सर्वेक्षण और

नसबंदी अभियान चलाया जाए।

मानवीय पकड़ने की तकनीक

प्रशिक्षित टीम द्वारा सुरक्षित जाल और उपयुक्त उपकरणों का इस्तेमाल किया जाए। अनावश्यक मारपीट, जहर या क्रूर तरीकों से पूरी तरह बचा जाए।

घायल और बीमार कुत्तों के लिए व्यवस्था

ऐसे कुत्तों को सामान्य नसबंदी अभियान से अलग पशु चिकित्सकीय देखभाल और आवश्यक उपचार उपलब्ध कराया जाए। यह भी आवश्यक है कि पकड़े गए कुत्तों का रिकॉर्ड रखा जाए, ताकि एक ही कुत्ते को बार-बार पकड़ने में संसाधनों की बर्बादी न हो। आवारा कुत्तों की समस्या का एक बड़ा कारण शहरों में खराब कचरा प्रबंधन है। जब तक खुले में खाद्य अपशिष्ट फेंका जाता रहेगा, तब तक कुत्तों को भोजन मिलता रहेगा और वे निश्चित स्थानों पर इकट्ठा होते रहेंगे।

नगरपालिका को खुले कूड़ेदानों की जगह ढक्कनयुक्त कूड़ेदान लगाने चाहिए। होटल, रेस्टोरेंट, सब्जी मंडी, मांस-मछली की दुकानों और बाजारों से निकलने वाले खाद्य अपशिष्ट का नियमित निस्तारण होना चाहिए। नागरिकों को भी सड़क पर भोजन और कचरा फेंकने से बचना चाहिए।



खेल

भारत ने फिर रचा इतिहास

भारतीय खिलाड़ियों ने एशियाई पैरा खेलों के इतिहास में सर्वाधिक 114 पदक जीते। आइची-नागोया में भारत ने 30 स्वर्ण, 35 रजत और 49 कांस्य सहित कुल 114 पदक जीत इतिहास रचा है।

भारत आगामी 2030 राष्ट्रकुल खेलों की मेजबानी कर रहा है। देश में ही 2036 ओलम्पिक खेलों का भी आयोजन हो, इसके प्रयास जारी हैं। विश्व के महाकुम्भ जैसे खेलों की मेजबानी प्राप्त करने के प्रयास में तमाम खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना सबसे महत्वपूर्ण है। कुछ उसी दिशा में भारत धीरे-धीरे ही सही, विश्वास भरे कदम अवश्य बढ़ा रहा है। आइची-नागोया एशियाई खेलों में आशातीत सफलता न मिलने के बाद

भारत की तैयारियों और खिलाड़ियों के प्रदर्शन चौतरफा आलोचना का दौर शुरू हो गया। लेकिन एक पखवाड़े बाद ही भारतीय दल ने एशियाई पैरा खेलों के इतिहास में सर्वाधिक 114 पदक जीतते हुए साबित किया - दावे में है दम।

युवा खिलाड़ियों ने कई अंतरराष्ट्रीय खेल मंचों पर ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए साबित किया है कि देश खेल की दिशा में तेजी से उन्नति कर रहा है। इस दौरान, आइची-नागोया एशियाई पैरा खेलों में भारत के दिव्यांग खिलाड़ियों के दिव्य



प्रवीण सिन्हा

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
 - डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
 - राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
 - भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
 - संघ विचारधारा और परिवर्तन
- जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-



ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of

HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मेसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

प्रदर्शन देख भारतीय खेलप्रेमियों की आंखें चौंधिया गई हैं। भारतीय युवाओं ने पैरा खेलों के विशाल दायरे में ऐसी ऊंची उड़ान भरी कि अब तक न केवल सर्वाधिक पदक जीत लिए, बल्कि एथलेटिक्स, शूटिंग, तीरंदाजी और बैडमिंटन में देश को एक खेल महाशक्ति के रूप में भी स्थापित कर दिया। सच तो यह है कि भारतीय दिव्यांग खिलाड़ियों ने भारत के 2036 ओलम्पिक की मेजबानी करने के सपने को भी साकार करने की दिशा में मजबूत कदम आगे बढ़ाया है।

आइची-नागोया में भारत ने 30 स्वर्ण, 35 रजत और 49 कांस्य सहित कुल 114 पदक जीत इतिहास रचा है। इस दौरान भारतीय पैरा एथलीटों ने 2023 हांगझाऊ एशियाई पैरा खेलों के पिछले 108 पदकों के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को पीछे छोड़ते हुए अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। भारतीय पैरा दल का यह प्रदर्शन इसलिए भी काफी मायने रखता है कि इस बार आइची-नागोया में महज 168 सदस्यीय दल ने भाग लिया और सीमित 11 खेलों में भाग लेते हुए 114 पदक जीत कर आशा से कहीं ज्यादा बेहतर प्रदर्शन किया। पिछले एक दशक में विशेषकर पैरा खेलों में भारत के प्रदर्शन पर नजर डालें तो 2023 हांगझाऊ एशियाई पैरा खेलों (303 सदस्यीय दल - 108 पदक) और 2018 जकार्ता एशियाई पैरा खेलों (190 सदस्यीय दल - 72 पदक) की तुलना में इस बार आइची-नागोया में भारतीय एथलीटों ने एक लम्बी छलांग लगाई है।

एथलीटों का कमाल

आइची-नागोया में भारतीय एथलीटों ने शानदार सफलताएं प्राप्त कीं। कुल 114 पदकों में से ट्रैक एंड फील्ड एथलीटों ने 22 स्वर्ण सहित कुल 65 पदक जीते। इसी तरह बैडमिंटन में भारत ने कुल 16 पदक जीत अपना दबदबा कायम किया। इन्हीं दो खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने 70 प्रतिशत से भी ज्यादा पदक जीत सुनहरे भविष्य का संकेत दिया है। सीमित संसाधनों के साथ किसी भी देश में 17 से 22 साल की उम्र में अगर खेलों के महाकुम्भ के पदक विजेता पैदा हो रहे हैं तो अगले 10-12 वर्षों में पदकों की संख्या तीन से चार गुणा तक बढ़ जाए तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। वैसे भी, गौर करें तो किसी भी देश को खेल महाशक्ति बनने के लिए एथलेटिक्स और तैराकी जैसे खेलों में उम्दा प्रदर्शन करना होता है क्योंकि इन्हीं खेलों में ज्यादा पदक दांव पर लगे होते हैं। अच्छी बात यह है कि आइची-नागोया में भारतीय एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन

कर आशा की किरणें जगाई हैं।

भारत ने अंतिम दिन 9 स्वर्ण पदक जीते, जिसमें बैडमिंटन, तीरंदाजी, निशानेबाजी के अलावा सबसे ज्यादा पदक एथलेटिक्स से आए। अनुभवी हाई जम्पर निशाद ने टी47 वर्ग में लम्बी कूद में पहली बार खेलते हुए 7.11 मीटर की शानदार छलांग के साथ स्वर्ण जीता। जैसा कि आशा थी, उन्होंने अपनी श्रेणी के ऊंची कूद में भी 2.04 मीटर के नए गेम्स रिकॉर्ड के साथ जीत दर्ज की। दूसरे डबल गोल्ड मेडलिस्ट दिलीप गावित रहे, जिन्होंने अपने पसंदीदा क्वार्टर माइल स्वर्ण के अलावा 10.69 सेकेंड का समय निकालकर अपनी श्रेणी में 100 मीटर का स्वर्ण भी जीता।

ऊंची उड़ान भरने की क्षमता

जिंदगी के महानायक युवा दिव्यांग खिलाड़ियों ने दिखा दिया कि उनके पास ऊंची उड़ान भरने की क्षमता, पदक जीतने की इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास किसी भी सक्षम खिलाड़ी से कम नहीं है। दिव्यांग खिलाड़ियों की सफलता को और बेहतर समझने के लिए गौर करें तो देश के शारीरिक रूप से सक्षम खिलाड़ियों की तुलना में दिव्यांग खिलाड़ियों पर कोई 10 प्रतिशत राशि खर्च हुई। लेकिन पदक जीतने का औसत हमेशा दिव्यांग खिलाड़ियों का बेहतर रहा। सामान्य और दिव्यांग खिलाड़ियों की तुलना का मतलब केवल इतना है कि दिव्यांगता के कारण जिंदगी की तमाम बाधाओं को पार करते हुए लंबे संघर्ष के बाद महामंच पर पहुंचने वाला हर खलाड़ी महानायक का दर्जा प्राप्त कर चुका है। इन खिलाड़ियों के प्रदर्शन देश को गौरवांवित्र करने के लिए काफी हैं। पिछले दिनों की बात याद आती है जब पेरिस पैरालम्पिक स्वर्ण पदक विजेता नवदीप सिंह ने पूरे गर्व के साथ कहा था - अब देश हम जैसे बौने खिलाड़ियों पर गर्व कर सकता है। आशा है समाज और खेल जगत से मिलने वाली उलाहनाओं और उपेक्षाओं का दौर अब खत्म होगा।

दूसरी ओर, दोनों हाथों के बिना तीरंदाजी करने वाली विश्व की इकलौती खिलाड़ी 19 वर्षीय शीतल देवी ने स्वीकार किया कि अगर उनकी मां ने त्याग न किया होता या अनवरत समर्पण न किया होता तो उनका जिंदा रहना भी मुश्किल था। अगले ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीतने का भरोसा जताया और अब शारीरिक रूप से सक्षम खिलाड़ियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की इच्छा है।



संकल्प

जहां तक सम्भव हो, पटाखों से परहेज करें और यदि पटाखे जलाना आवश्यक हो, तो केवल प्रमाणित ग्रीन पटाखे चुनें। ग्रीन पटाखे फोड़ें, प्रदूषण फैलाना छोड़ें, केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि स्वच्छ हवा, स्वस्थ जीवन और हरा-भरा भविष्य बनाने का संकल्प है।

ग्रीन पटाखे फोड़ें, प्रदूषण फैलाना छोड़ें

ग्रीन पटाखे फोड़ें, प्रदूषण फैलाना छोड़ें यह केवल एक नारा नहीं है, बल्कि आज के समय में पर्यावरण, स्वास्थ्य और सामाजिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए त्योहार मनाने का संदेश है। भारत में दीवाली, शादियों, नववर्ष और अन्य उत्सवों पर पटाखों की परंपरा बहुत पुरानी है। पटाखों की चमक और आवाज में लोग खुशी व्यक्त करते हैं, पर इसी खुशी की कीमत अक्सर बढ़ते वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और स्वास्थ्य संकट के रूप में चुकानी पड़ती है। ऐसे में ग्रीन पटाखे एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आए हैं, जो परम्परा और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

ग्रीन पटाखे ऐसे पटाखे हैं जिन्हें वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के पिलानी अवस्थित राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान ने कम प्रदूषण वाली तकनीक से विकसित किया है। इन पटाखों को बनाने का उद्देश्य यह है कि त्योहार की रौनक भी बनी रहे लेकिन हवा में जहरीले धुएं और धूल के कण कम फैलें।

ये पटाखे दिखने और आवाज में आम पटाखों जैसे ही होते हैं, लेकिन इनकी रासायनिक बनावट अलग होती है। इनमें सल्फर, पोटैशियम नाइट्रेट, एल्युमिनियम और अन्य प्रदूषण फैलाने वाले तत्वों की मात्रा कम रखी जाती है। नियमों के अनुसार इनमें लिथियम, आर्सेनिक, लेड और मरकरी जैसे गम्भीर रूप से हानिकारक रसायनों का उपयोग नहीं किया जाता है।

पारम्परिक पटाखे जलने पर हवा में पी एम 2.5 और पी एम 10 जैसे सूक्ष्म कण छोड़ते हैं। ये कण इतने बारीक होते हैं कि सांस के जरिए शरीर के अंदर तक पहुंच सकते हैं। इनसे खांसी,

सांस लेने में तकलीफ, आंखों में जलन, अस्थमा और हृदय सम्बंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। इसके विपरीत, ग्रीन पटाखों में कणिका प्रदूषण लगभग 30 से 35 प्रतिशत कम होता है। कुछ श्रेणियों में सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन भी कम होता है। इससे हवा की गुणवत्ता पर पड़ने वाला असर अपेक्षाकृत कम होता है। विदित हो कि दीपावली सहित हमारे अधिकांश त्योहारों का समय प्रायः सर्दियों की शुरुआत से जुड़ा होता है, जब हवा की गति धीमी हो जाती है। ऐसे में पटाखों का धुआं हवा में लम्बे समय तक रुका रहता है और स्मॉग की समस्या गहराती है। बड़े शहरों में, जहां वाहनों, उद्योगों और निर्माण कार्यों से पहले से प्रदूषण होता है, पटाखों का धुआं स्थिति को और बिगाड़ देता है।

इस बढ़े हुए प्रदूषण से बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएं और सांस सम्बंधी बीमारियों से पीड़ित लोग अधिक प्रभावित होते हैं। पटाखों की तेज आवाज से पालतू और आवारा जानवर भी बेहद घबरा जाते हैं। वे डरकर भागते हैं, छिपते हैं और कई बार चोटिल हो जाते हैं। ग्रीन पटाखे ध्वनि और वायु प्रदूषण को सीमित करने में सहायता करते हैं।

यहां यह जानकारी देना भी आवश्यक है कि बाजारों में कुछ साधारण पटाखों को भी ग्रीन पटाखा बताकर बेचा जाता है। इसलिए खरीदते समय सावधानी आवश्यक है। असली ग्रीन पटाखों के पैकेट पर सीएसआईआर नीरी का ग्रीन लोगो और क्यूआर कोड होता है। इस क्यूआर कोड को मोबाइल से स्कैन करके पटाखे की असलियत और प्रमाणन की जानकारी देखी जा सकती है।



सुभाष चंद्र लखेड़ा

कुछ चटपटे तो कुछ अटपटे पकवान



भारत में खान-पान की विविधता है। प्रत्येक राज्यों में, अलग-अलग क्षेत्रों में खान-पान की परम्परा रही है। कुछ पारम्परिक पकवान अपनी अनोखी सामग्री या बनाने के तरीके के कारण बेहद अजीबोगरीब माने जाते हैं। देश के अलग-अलग जगहों पर मिलने वाले कुछ सबसे प्रसिद्ध अजब-गजब पकवान के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं।

लाल चींटी की चटनी (चापड़ा)-छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में आदिवासी समुदाय द्वारा लाल चींटियों और उनके अंडों को पीसकर यह चटनी तैयार की जाती है। चींटियों में मौजूद फॉर्मिक एसिड के कारण इसका स्वाद काफी तीखा और खट्टा होता है। इसे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक माना जाता है।

बेनामी खीर-उत्तर प्रदेश

इस अनोखी खीर का मुख्य घटक लहसुन है। लहसुन को फिटकरी के पानी में कई बार उबालकर उसकी गंध और तीखापन पूरी तरह खत्म कर दिया जाता है, जिसके बाद इसे गाढ़े दूध और चीनी के साथ पकाया जाता है। खाने वाले को पता ही नहीं चलता कि वे लहसुन खा रहे हैं।

प्याज का हलवा

आमतौर पर सब्जियों और तड़के में प्रयोग होने वाले सफेद प्याज को घिसकर मावा, चीनी, दूध और ढेर सारे घी के

साथ पकाकर यह मीठा हलवा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद बेहद लाजवाब होता है और प्याज की महक बिल्कुल नहीं आती।

एरी पोलू (रेशम के कीड़े)-असम

असम की इस पारम्परिक डिश में रेशम के कीड़े के प्यूपा का प्रयोग किया जाता है। रेशम निकालने के बाद बचे हुए प्यूपा को स्थानीय मसालों और बांस के कोपलों के साथ भूनकर चाव से खाया जाता है।

फन प्युट (सड़े हुए आलू)-मेघालय

शाकाहारी खाने में यह सबसे अजीब पकवान माना जाता है। इसमें आलू को जानबूझकर मिट्टी के अंदर तब तक छोड़ दिया जाता है जब तक कि वे सड़ न जाएं। इसके बाद इन सड़े हुए आलुओं को निकालकर पारम्परिक मसालों के साथ पकाकर खाया जाता है।

फायर पान - दिल्ली/मुंबई

यह कोई सब्जी नहीं बल्कि एक अनोखा माउथ फ्रेशनर है। गुलकंद, मसाले और मेवों से भरे पान के ऊपर एल्कोहॉलिक लिक्विड डालकर आग लगा दी जाती है और जलता हुआ पान सीधे ग्राहक के मुंह में डाला जाता है। मुंह में जाते ही आग बुझ जाती है और यह बेहद ठंडा और मजेदार अनुभव देता है।

अब कपड़ों पर चलेगा फोन

सिंगापुर नेशनल यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने ऐसी स्मार्ट टेक्नोलॉजी विकसित की है, जिसमें कपड़े पर वीडियो देखना, कैलकुलेटर चलाना, कम्पास प्रयोग करना और शरीर का तापमान मापना सम्भव है। विशेष बात यह कि 50 बार मशीन में धोने के बाद भी इसकी चमक और टच रिस्पॉन्स लगभग वैसा ही रहता है। इस रिसर्च में भारतीय शोधार्थी श्वेतिका चतुर्वेदी भी शामिल हैं। फिलहाल यह सिर्फ प्रोटोटाइप है, बाजार में अभी उपलब्ध नहीं।



संवाद करने की नई तकनीक

लकवे से जूझ रहे लोगों के लिए संवाद का नया रास्ता खुल गया है। वैज्ञानिकों ने ऐसा ब्रेन-कम्प्यूटर इंटरफेस विकसित किया है, जो दिमाग के विद्युत संकेतों से बोलने और इशारे करने की मंशा को एक साथ पहचान लेता है।



यह तकनीक शब्दों को स्क्रीन पर टेक्स्ट में बदलती है और डिजिटल अवतार के जरिए हाथ-सिर-शरीर के हाव-भाव भी दिखाती है। नेचर न्यूरोसाइंस में प्रकाशित इस अध्ययन में एआई की सहायता से मस्तिष्क की गतिविधियों को डिकोड किया गया। 253 इलेक्ट्रोड वाले सर्जिकल इम्प्लांट को सेंसरिमोटर कॉर्टेक्स पर लगाया गया, जो बोलने और हरकत से जुड़े संकेत रिकॉर्ड करता है। दो प्रतिभागियों-एक ब्रेनस्टेम स्ट्रोक और दूसरे एएलएस से पीड़ित-पर परीक्षण हुआ। सिस्टम ने चुपचाप बोलने की कोशिश और हाथ हिलाने, सिर हिलाने जैसे इशारों को साथ-साथ समझा। जब दोनों को मिलाकर प्रशिक्षित किया गया तो सटीकता और

बढ़ गई। पहले प्रतिभागी में कई परीक्षणों में 100 प्रतिशत और दूसरे में भाषण 75 तथा इशारे 85 प्रतिशत सटीक रहे। अब 'हेलो' कहने के साथ हाथ भी हिल सकेगा-यह सिर्फ तकनीक नहीं, बल्कि आशा की नई किरण है।

छिपकली की दो नई प्रजातियां मिलीं

तेलंगाना में छिपकली की दो नई प्रजातियां मिलीं, जो स्थानीय संस्कृति और प्रकृति से गहराई से जुड़ी हैं। नलगोंडा जिले में पाई गई हेमिडैक्टिलस कैरनिकोल का नाम पारम्परिक पत्थरों के ढेर पर रखा गया, जहां यह रहती है। वारंगल में मिली दूसरी प्रजाति हेमिडैक्टिलस कोयाओरम को कोया आदिवासी समुदाय के सम्मान में नाम दिया गया। वैज्ञानिकों ने शारीरिक बनावट, सांख्यिकीय विश्लेषण और डीएनए जांच से इन्हें नई प्रजाति के रूप में पुष्टि की। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, फकीर मोहन विश्वविद्यालय, नेहरू प्राणी उद्यान और भारतीय वन्यजीव संस्थान के शोधकर्ताओं ने इस खोज में हिस्सा लिया। यह अध्ययन यूरोपियन जर्नल ऑफ टैक्सोनामी में प्रकाशित हुआ है। यह खोज तेलंगाना की समृद्ध जैव विविधता और छिपे हुए वन्यजीवों को बचाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। हमारे आसपास की चट्टानें और जंगल अब भी कई अनजाने रहस्यों को संजोए हुए हैं।





**TJSB SAHAKARI
BANK LTD.** MULTI-STATE
SCHEDULED BANK

Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

WHEELS ON YOUR WISHLIST?

Let's make it happen,



now at just **8.05%*** p.a. with
TJSB Auto Finance Loan.

T&C Apply*

www.tjsb.bank.in | ☎ : 022- 48897204